International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2020, Submitted in January 2020, iajesm2014@gmail.com

प्राचीन भारतीय इतिहास में जलप्लावन का इतिहास

डॉ. निशा रम्पाल, हिन्दी विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

जलप्लावन की घटना ,मनुष्य के मूल इतिहास में विद्यमान है। इसका वर्णन विश्व की प्रमुख जातियों ,धर्मों और देशों में मिलता है। सृष्टि और प्रलय के अनेक प्रकार के वृत्तान्त प्राचीन ग्रंथों में पाए जाते हैं। प्रलय के दो रूप है, एक महा प्रलय और दूसरा खण्ड प्रलय । कामायनी में प्रसाद ने महाप्रलय घटना से कामायनी की शुरूआत देखने को मिलती है ,महा प्रलय वह होता है, जिसमें कार्य जगत् कारण जगत् में लीन हो जाता है ,कामायनी में यही घटना का वर्णन मिलता है,इस महाप्रलय में सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश होकर फिर से नवीन सृष्टि का निर्माण होता है ,कामायनी में मनु के द्वारा महाप्रलय घटना का वर्णन किया है- ‘ हिम गिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,एक पुरूष भीगे नयनों से,देख रहा था प्रलय - प्रवाह ! नीचे जल था , ऊपर हिम था,एक तरल था,एक सघन, एक तत्व की प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन ।.... ’ 1.सृष्टि का आरम्भ जल से माना जाता है ।

बृहदारण्यक -उपनिषद् में आदि सृष्टि की कथा -वर्णन में कहा गया है कि आरम्भ में सर्वत्र जल ही विद्यमान था . जल से सत्य का निर्माण हुआ, सत्य से ब्रह्म का , ब्रह्म से प्रजापति का और प्रजापति से देवताओं का निर्माण हुआ ।वे देवता सत्य के ही उपासक थे (आप एवेदमग्र आसीत्ता आप: सत्य सृजन्ति सत्यं ब्रह्म ,ब्रह्म प्रजापतिं प्रजापतिर्देवान् ते देवा:सत्यमेवोपासते ।।)2.

सृष्टि- रचना के प्रारभ में जल का उल्लेख प्राय:सभी धर्मों के ग्रंथों में मिलता है। नारद -पुराण में भी आप तत्व की ही प्रधानता मानी गयी है। इन ग्रंथों का संकेत इसी बात की ओर है कि पानी समय अथवा काल के प्रभाव के कारण संसार के अनेक रूपों में प्रगट या परिवर्तित होता है। खण्ड़ प्रलय का भी वर्णन कई ग्रंथों में पाया जाता है, खण्डप्रलय में अति वृष्टि के कारण अनेक देश,करोड़ों मनुष्य और जीव जन्तु प्राणी नष्ट हुए है, खण्डप्रलय को प्राकृतिक प्रलय भी कहा जाता है इस प्रलय को ही जलप्लावन का नाम दिया गया है। जलप्लावन का विवरण प्राप्त करना कठिन जरूर है, क्योंकि प्राचीन काल में जीवन,धर्म और साहित्य एक दूसरे से अभिन्न थे । भारत का सम्पूर्ण वैदिक , पौराणिक और उपनिषद् साहित्य जीवन की समस्याओं को सुलझाने के भावात्मक प्रयास ही हैं । अत: यह जलप्लावन की घटना , धार्मिक ग्रंथों में वर्णित होते हुए अत्यधिक देवी रूप ग्रहण कर चुकी है। प्रसाद की कामायनी में यह रूप देखने को मिलता है ।

मानव - इतिहास की जलप्लावन की घटना को विश्व के वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है ।वैज्ञानिकों के विचार में समय -समय पर भू-भागों में सागर भर जाते हैं। सारी पृथ्वी जलमय हो जाती है। समुद्रोंकि यब स्थिती पर्याप्त समय तक रहेती है , इससें पृथ्वी का ऊँचा भाग जल में विनष्ट हो जाता है जब जल का स्तर नीचे उतरने लगता है और कुछ भाग पर्वत श्रेणियों में परिवर्तित हो जाता है। इस अवसर पर ज्वालामुखी के विस्फोट की संभावना होती है। जल में अनेक वस्तुएँ एकत्रित हो कर स्थिति बदल देती हैं ।3.

होम्स,होर्नसा, ट्रिंकलर आदि वैज्ञानिकों ने हिमालय और उसके प्रान्त में जलप्लावन का होना स्वीकार किया है साथ में वैज्ञानिक आधार भी प्रस्तुत किया है, वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए डॉ. वाडिया लिखते हैं- परसियन काल से ही हिमालय और तिब्बत के समीप समुद्र की गन्दगी जमा हो रही थी ,क्रमश: सागर विलीन हो गया और उसके स्थान पर संसार का महान् हिमालय पर्वत दृष्टि गोचर होने लगा ।4.

विश्व साहित्य में समय समय पर इतिहास, गाथा और विज्ञान में समन्वय स्तापित करने के कई तरह से प्रयत्न किये गये हैं। जैसे- प्राचीन ग्रंथों में पौराणिक गाथाओं के अनेक चित्र अलंकारिक पद्दति सें पाते हैं। विशवकर्मा की कथा इसी के निकट आती है। वे ज्वालामुखी के देवता थे और उन्होंने वृत्ति का नाश करके एक नवीन जाती को जन्म दिया था।

जलप्लावन (खण्डप्रलय) की कथा भारतीय साहित्य में अनेक स्थलों पर मिलती है। सबसे पहले हमें यह कथा का विस्तृत एवं कथात्मक रूप शतपथ ब्राहम्ण में दिखायी पड़ती है। जलप्लावन इतिहास की एक ऐसी घटना है, जिसने मनु को देवों से भिन्न विलक्षण मानव संस्कृति के निर्माण का अवसर प्रदान किया है ,जलप्लावन की घटना को शतपथ ब्राहम्ण में ओघ कहा गया है। कथा इस प्रकार है-

एक दिन प्रभात के समय हाथ धोने के लिए जल लेने पर मनु के हाथ में एक छोटी - सी मछली आ गयी , उसने मनु से अपनी रक्षा की प्रार्थना की। इसके साथ ही उस मछली ने मनु को आगामी प्रलय की सूचना दी । उसने कहा कि तुम एक नौका बनाकर उसमें चढ़ जाना और मैं बड़ो होकर तुम्हारी रक्षा करूँगी। मनु के

संपोषण में बह मछली बहुत बड़ी हो गयी । कालांतर में जो जलप्लावन हुआ, उसमें उस मछली ने मनु की नाव को अपने सीगों से बाँधकर उत्तरगिरि की उत्तगं शिखर की चोटी पर पहुँचा दिया । इसप्रकार मनु द्वारा रक्षित और पोषित मत्स्य ने मनु को बचाया । ये ही मनु ,मनुष्य जाति के आदि प्रवर्तक मनु हुए ।5

जैमिनीय ब्राहम्ण में भी इस कथा का संक्षिप्त रूप मिलता है। इसमें बताया गया हैकि सामवेद की ऋचाएँ स्वर्ण नौका बनकर मनु की रक्षा करती है 6.

महाभारत में जलप्लावन की घटना विस्तार पूर्वक मिलती है । महाभारत में शतपथ ब्राह्मण की कथा पर्याप्त परिवर्तित हो गयी है । कथा है- एक दिन वैवस्वत मनु चारिणी नदी में नहाकर किनारे पर तप कर रहे थे । इसी समय एक छोटी सी मछली ने आकर कहा कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को खा जाती है । मुझे डर लगता है,आप मेरी रक्षा कीजिए । मनु ने उस मछली को एक सफेद रंग के घड़े में रख दिया ।

बड़ी होने पर जब मछली उसमें न समाने लगी तब मनु ने दो योजन लम्बे और एक योजन चौड़े जलाशय में उस मछली को रख दिया ।धारे - धीरे बह वह एक भारी मत्स्य बन गयी । मनु ने उसे गंगा में छोड़ दिया । फिर वह इतनी बड़ी हो गयी कि उसका गंगा में रहेना भी असम्भव हो गया । तब मनु उसे समुद्र में छोड़ने गए। समुद्र में छोडते समय मत्स्य ने कहा कि हे महाभाग ! यह चराचर जगत् शीघ्र ही प्रलय से नष्ट होनेवाला है ।आप एक दृढ नाव बना लीजिए और उसमें एक मज़बूत रस्सी रखिए ।आप सप्तर्षियों और सब प्रकार के बीजों के साथ उस पर बैठ जाइए । उस समय मैं आपकी रक्षा करूँगा । वचन के अनुसार प्रलय के समय वह मत्स्य आ पहुँचा ,उसने अपने सींग में नाव को बाँध लिया । थोड़े दिनों के बाद ,जब हिमालय की सबसे ऊँची चोटी दिखायी पड़ी तब उस मत्स्य ने उस चोटी पर नाव बाँध दी .इसप्रकार प्रजापति ब्रह्मा ने मत्स्य का रूप धारणकर मनु , सप्तर्षियों और बीजों से भरी नौका की रक्षा की 7.

शतपथ ब्राह्मण से महाभारत की कथा में परिवर्तन देखने को मिलता है -महाभारत में मनु बदरिकाश्रम में तप करते हैं । एक दिन समीप की चारिणी नदी के किनारे तप करते हुए उनकी भेंट एक छोटी मछली से होती है , महाभारत में मनु, परम तेजस्वी,प्रतापी महर्षि हैं ।,महाभारत में मत्स्य ने मनु को इस बात की सूचना दी है कि पदार्थों के विनाश का समय आ गया है । यहाँ मत्स्य ने स्वयं को प्रजापति ब्रह्मा बताया है,यहाँ मनु के साथ-साथ सप्तर्षि और समस्त पदार्थों के बीज भी बचे रहते है ,महाभारत में मनु जिस जगह पर उतरे थे , उसका नाम शतपथ ब्राह्मण के समान मनोरवसर्पण न होकर नौबन्धन है, ।

महाभारत के बाद , जलप्लावन की कथा मत्स्यपुराण में मिलती है । इस पुराण में कथा अलग रूप में मिलती है कथा इसतरह से है- दक्षिण देश के राजा मनु ,मलय पर्वत पर तपस्या करतें हैं,एक दिन तपस्या करते समय उनकी भेंट एक मत्स्य से होती है । यह मत्स्य बीस आयुत लम्बा था .इस मत्स्य ने राजा मनु को संदेश दिया कि शीघ्र ही प्रलय होने वाला है । इस प्रलय के बीच नवीन सृष्टि का विकास सतयुग से प्रांरभ होगा और उस नवीन सृष्टि में आप चराचर जगत् के प्रजापति होंगे ।मन्वन्तर के अधिपति होने के कारण आप सर्व पूज्य होंगे ।मत्स्य के आदेशानुसार मनु के लिए देवताओं ने एक नाव तैयार की है ,इस नाव में मनु के साथ- साथ तीन वेद ऋक्, यजु और साम, सम्पूर्ण विधाएँ और पुराण , महर्षि मार्कण्डेय तथा शंकर भी बचे रहे । इनके अतिरिक्त चंग्रमा,सूर्य और नर्मदा नदी भी अवषिष्ट रही। प्रलय के समय देवता की बनायी नाव राजा मनु के पास पहुँच गई थी ।8.

हम कह सकते है कि मत्स्यपुराण में धार्मिक विचार प्रभाव दिखायी देता है ,महाभारत की कथा से जो परिवर्तन है वो यह है- इस कथा में मनु दक्षिण देश के राजा है, मत्स्य का आकर बीस आयुत लम्बा है,मनु राजा के साथ तीन वेद , सम्पूर्ण पुराण, सूर्य, चंद्रमा , नर्मदा नदी, महर्षि मार्कण्डेय, अनेक वस्तुएँ , प्राणी और शकंर रहे,नौका से उतरने का वर्णन नहीं है मत्स्य विष्णु भगवान का अवतार है ।

मत्स्य पुराण के बाद यह कथा भागवतपुराण में मिलती है भागवत पुराण की कथा मत्स्यपुराण से मिलती जुलती है , कुछ ही कथा है जो अलग मिलती है वह इस तरह से है - द्रविण देश के राजा सत्यव्रत मलय पर्वत के समीप ,कृतमाला नदी के तट पर तर्पण कर रहे थे । वे उन दिनों केवल जल पी कर तपस्या कर रहे थे । तर्पण करते समय उनकी अंजलि में एक मछली आ गयी , उसने राजा से रक्षा से रक्षा की प्रार्थना की ,राजा उसे पात्र में रखकर अपने आश्रम ले आए। एक रात में ही मछली इतनी बढ़ी हो गयी की वह पात्र में न समा सकी फिर उसे मटके में रखा गया उसमें भी समा नहीं पाई फिर राजा उसे सरोवर में डाल दिया मछली ने सरोवर में महामत्स्य का रूप धारण कर लिया ।अन्त में उसे समुद्र में राजा छोड़ने गए ,तब मत्स्य ने कहा- आज से सातवें दिन तीनों लोक समुद्र में डूब जाएँगे, उस समय मेरी प्रेरणा से तुम्हारे पास एक बड़ी नौका आएगी ,तुम समस्त प्राणियों के सूक्ष्म शरीरों को लेकर उस पर चढ़ जाना .सब प्रकार के धान्य और

बीजों को भी ले लेना । सप्तर्षियों के प्रकाश में चारों ओर विचरण करते रहना । मैं उस समय प्रगट होकर वासुकी नाग के द्वारा नाव को मेरे सींग में बाँध लूँगा और प्रलय की समाप्ति तक विचरण करता रहूँगा , ठीक समय पर प्रलय हुआ । नाव आ गयी .मत्स्य के निर्देशानुसार वे सब कुछ लेकर नाव पर चढ़ गए । चार लाख कोस लम्बा मत्स्य आ पहुँचा । उसकी साहयता से राजा सत्यव्रत बच गए । प्रलय के अनन्तर वे मनु के नाम से आदि सृष्टि और उनसे सृष्टि -क्रम चला । विष्णु भगवान मत्स्य रूप धारण कर सृष्टि के रक्षक बने ।9.
भागवतपुराण में जो जलप्लावन की कथा का जो परिवर्तित कथा ये है- भागवत में मनु को द्रविड़ देश का राजा तथा मलय पर्वत के समीप कृतमाला पर तर्पण करता हुआ बताया है, यहाँ सभी प्राणियों के जोड़े , सब तरह के बीज व औषधि बच जाती है ,मनु की नौका सप्तर्षियों के प्रकाश में बढ़ जाती है ,मत्स्य स्वर्ण रंग का है और एक लाख योजन लम्बा है ।नौका स्वयं मनु के पास आती है ।
अग्निपुराण की कथा भागवतपुराण के समान ही है,यह कथा अग्निपुराण के दुसरे अध्याय में मिलती है 10 इसके पूर्व आदि मनु को स्वायंभुव की सन्तान मानते थे। अग्निपुराण में विष्णु के पुत्र ब्रह्मा, उनके पुत्र मरीचि,मरीचि के पुत्र कश्यप ,कश्यप के पुत्र सूर्य और सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु माने गये हैं ।
अग्निपुराण के बाद, जलप्लावन की कथा भविष्यपुराण में भी मिलती है पर इस कथा में पर्याप्त अन्तर आ गया है । भविष्यपुराण की कथा बाइबल की कथा के अत्यन्त समीप सी जान पड़ती है । कथा इसप्रकार है- न्यूह नामक भारतवर्ष के एक राजा थे । वे विष्णु के बड़े भक्त थे ,न्यूह आदम की सन्तान थे । एक दिन विष्णु भगवान ने राजा न्यूह को स्वप्न में आकर आदेश दिया कि आज से सातवें दिन प्रलय होगा ।तुम एक नाव बनाकर अपने परिवार के साथ उस पर चढ़ जाना ,राजा न्यूह ने भगवान विष्णु के आदेशानुसार पचास हाथ चौड़ी और तीनसौ हाथ लम्बी नाव बनायी ,विष्णु ने अपनी और अपने परिवार की रक्षा इसी नाव में चढ़कर की,और अन्त में वे सपरिवार शिषिणा नामक हिमालय की एक चोटी पर जाकर उतरे ।11
भविष्यपुराण की जलप्लावन की कथा में अग्निपुराण की तुलना में पर्याप्त परिवर्तन हो गया-
यहाँ आदि पुरूष का नाम न्यूह बताया गया है और वह आदम की संतान है । इसके पूर्व आदि पुरुष मनु राजा सत्यव्रत आदि थे ।मनु वैवस्वत मनु थे , जो स्वायंभुव मनु के पुत्र थे .कहीं - कहीं मनु को सुर्य का पुत्र भी माना गया है । हो सकता है आदि मनु शब्द जो स्वायंभुव मनु के लिए प्रयुक्त होता था,वही आदम बन गया हो । , यहाँ प्रलय की सूचना देने के लिए भगवान ने अवतार धारण नहीं किया ,स्वप्न में ही विष्णु भक्त राजा न्यूह को सातवें दिन होने वाले प्रलय की सूचना तथा राजा और उसके परिवार की रक्षा के लिए नाव बनाने का आदेश दिया है । तीसरा परिवर्तन यह हो सकता है कि नाव को पर्वत की चोटी तक पहुँचाने क् लिए किसी मत्स्य आदि की आवश्यकता नहीं पड़ी राजा स्वयं बच कर शिषिणा नामक चोटी पर पहुँच गये हैं।
पुराण -युग तक यह कथा जलप्लावन से ही संबंधित रही है । इसके अनन्तर ,भारत में बौद्ध धर्म का उदय हुआ । इस धर्म में जलप्लावन का कोई वर्णन नहीं है । बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध जातक ग्रंथ मच्छ जातक 12 में बोधिसत्व के मछली की योनि में जन्म लेने और जन्म लेने के बाद जल की वृष्टि कराकर संसार का कल्याण करने की कथा मिलती है । इसी प्रकार एक दूसरे ग्रंथ के सीलानिसंस जातक 13 में एक समुद्र देवता का किसी सदाचारी नाई को नौका में बिठला कर समुद्रपार करवा देने तथा अन्य सभी दुराचारियों को जलमग्न कर देने की कथा मिलती है।
जातक कथाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पुराणों और ब्राह्मण ग्रंथों की कथा के दो मूल आधार, इन जातक कथाओं में भी जैसे के तैसे ही सुरक्षित रखे गये है - पहला है मछली अथवा जल-देवता द्वारा दुराचारियों का विनाश तथा सदाचारियों की रक्षा । दूसरा है -पापी सृष्टि के विनाश का साधन जल ।
इसप्रकार जातक कथाओं में प्रयुक्त कथाओं का कलेवर भले ही बदल गया हो , लेकिन कथा का उद्देश्य वहीं पुराणों की पुरानी बात को दर्शाना रहा है।
जैन ग्रंथों में भी जलप्लावन तथा मनु का वर्णन मिलता है । धर्मघोष सूरि ने स्वरचित कालासप्ततिका ग्रंथ में प्रथम युग और द्वितीय युग का वर्णन किया है । प्रथम युग का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं कि इस युर में क्रमश: क्षार,अग्नि ,विष, अम्ल और विद्युत से भरे हुए मेघ सात दिन तक लगातार वर्षा करेंगे । इसके साथ ही विषैली हवा चलेगी । यह वर्षा रोगों को बढ़ाने वाली होगी । चारों ओर त्राहि -त्राहि मच जाएगी ,और सारे प्राणी नष्ट हो जायेंगे। द्वितीय युग में विमलवाहन नाम के प्रथम मनु होंगे । ये संपूर्ण जगत् की व्यवस्था करेगें ।14.
इसके अतिरिक्त जिन सेनाचार्य ने अपने महापुराण में भी प्रलय का वर्णन किया है,तथा विमलवाहन मनु को सातवाँ मनु बताया है । ये मनु भोगलक्ष्मी वाले कहे गये हैं ।15

इन जैन ग्रंथों से दो बातें स्पष्ट हो जाती है- एक जलप्लावन अथवा प्रलय की घटना हुई थी और दूसरी इस प्रलय के बाद की सृष्टि के आदि पुरूष मनु - सातवें मनु थे। पुराणों में भी वैवस्वत मनु को सातवाँ मनु ही माना गया है।

भारत का संम्पूर्ण प्राचीन इतिहास तथा अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथ जलप्लावन के वर्णन से भरे हुए हैं। हाँ कहीं तो इसका संबंध मनु से दिखाया गया है और कहीं नहीं। वाल्मीकि रामायण के युद्धकांड में प्रलय जैसी भीषण स्थिति का वर्णन मिलता है।16 विष्णुपुराण में प्रलय का वर्णन करते तिखा हैकि चतुर्युग सहस्त्र के बीत जाने पर लगभग सौ वर्ष तक अनावृष्टि होती है। इसके बाद भगवान विष्णु समस्त प्रजा का नाश करने के लिए रूद्र का रूप धारण करते हैं और तब महावृष्टि होकर समस्त जगत् जलमग्न हो जाता है 17. इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुराण, मार्कण्डेयपुराण, स्कन्दपुराण आदि ग्रंथों में अनेक स्थलों पर भीषण प्रलय का वर्णन मिलता है। दक्षिण भारत के प्राचीन ग्रंथों में भी जलप्लावन का वर्णन पाया जाता है.। अस्तु .

संदर्भ सूची.

1. पृ.3. कामायनी, जयशंकर प्रसाद , भारती भंडार,लीडर प्रेस,इलाहाबाद,दशम संस्करण सं. 2015 वि.
2. ऋ. 5 , 5 ,1, बृहदारण्यक उपनिषद् .
3. Radioactivity and Surface History of Earth : J.Jolly,P .5,
4. Geology of India : D.N.Wadia, (1949) P.224. forgotten books,-2018
5. शतपथ ब्राह्मण काण्ड 1,अ 8,ब्राह्मण 1.
6. जैमिनीय ब्राह्मण 3.99.
7. महाभारत - वनपर्व , अध्याय 187.
8. मत्स्यपुराण - 1 .10 . 4.
9. भागवत पुराण ,अष्टम स्कन्ध, अध्याय 24.
10. अग्निपुराण .2.1.17.
11. प्रति सर्ग पर्व -3.4.1-54.
12. जातक खण्ड 1.पृ.430.
13. जातक खण्ड 2 पृ. 274.
14. कालसप्ततिका .56-62.
15. महापुराण .1.158,तथा 13,116 -117.
16. वाल्मीकि रामायण -24, 7-15.
17. विष्णुपुराण - 6,3.11-50.

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY